बन्धन मुक्ति अपने भीतर : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 10 जनवरी 2011

बन्धन मुक्ति तुम्हारे अपने ही भीतर है। बन्धन व मुक्ति दोनों में हमारा भाव जिम्मेदार है, मानव जो प्रवृति करता है उसमें मन प्रधान है। कार्य करने से पहले मन में भाव है और वह कार्य करता है। उक्त धर्म संबोधन राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाश्रमण ने नगर के गोलछा ज्ञान मंदिर में बने भव्य विशाल प्रवचन पाण्डाल में दिया। उन्होंने बताया कि हमारे भाव शुद्ध होने पर मन पवित्र कार्य करता है। बन्धन मुक्ति की भावना मन में आने पर आदमी के मन में व्रत, संयम, त्याग की भावना भी जाग्रत होती है। 'व्रत चेतना का जागरण' पर चर्चा करते हुए बताया कि व्यक्ति के मन में व्रत चेतना का जागरण होने पर ही वह धर्म के मार्ग पर चल सकता है।

धर्म प्रवचन से पूर्व पाण्डाल में दिवंगत शासन श्री मुनि हीरालाल स्वामी के प्रति आचार्य महाश्रमण, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी, मुनि किशनलाल, मुनि विमल कुमार, मुनि धनंजय कुमार, सहित अनेंकों संत–साध्वियों, श्रावक–श्राविकाओं ने शाब्दिक व चार लोगस्स के पाठ से श्रद्धांजलि दी। आज पधारे शासन गौरव मुनि श्री ताराचन्द जी, मुनि श्री सुमिति कुमार जी, मुनि आदित्य कुमार जी, साध्वी श्री चन्दनबाला जी, साध्वी विनय श्री जी, साध्वी कैलाशवती जी आदि ने रतनगढ़ प्रवेश कर आचार्य प्रवर के प्रति श्रद्धा समर्पण कर अपनी भावनायें गीतिका एवं सम्भाषण से निवेदित की। आचार्य प्रवर ने शासन गौरव मुनि श्री ताराचन्द, मुनि कमल कुमार जी एवं शासन गौरव साध्वी राजीमती के प्रति आदर भाव प्रकट किया और मुनि श्री विमल कुमार को समुच्चय के कार्यों की बख्शीष प्रदान की। इस अवसर पर रतनगढ़ स्थली में जन्मी शासन गौरव साध्वी श्री राजीमती जी ने अपनी जन्म स्थली की ओर से आचार्य प्रवर का स्वागत किया व यहां पर चातुर्मास की अर्ज की। आपकी अर्ज में सम्पूर्ण रतनगढ़ श्रावक–श्राविका समाज भी सहभागी बना। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मैं बुजुर्ग संतो के दर्शन व तीर्थ यात्रा करते हुए यहां आया हूं। आज के कार्यक्रम में प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री बुद्धमल जी दूगड़ ने आचार्य प्रवर का एक चित्र आचार्य प्रवर को समर्पित कर वितरित किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com